International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
May-June 2018, Volume-5, Issue-3
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

आधुनिक युग में चाणक्य नीति के महत्व पर एक अध्ययन

संपूर्ण सिंह बुरा
शोधार्थी
ओ. पी. जे. एस विश्वविद्यालय

डॉ निधि रस्तोगी
सहायक आचार्य
ओ. पी. जे. एस विश्वविद्यालय

सार

चाणक्यनीति, एक ब्राह्मण विद्वान और राजनेता चाणक्य, जो चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में रहते थे, के लिए सिद्धान्तों का एक संग्रह है। चाणक्य को भारत के पहले सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के उत्थान में उनकी भूमिका के लिए जाना जाता है। चाणक्यनीति भारतीय राजनीतिक चिंतन में अंतर्दृष्टि का एक मूल्यवान स्रोत है और सदियों से भारतीय राजनीतिक और सामाजिक विचारों को आकार देने में प्रभावशाली रही है।

चाणक्यनीति को तीन भागों में बांटा गया है अर्थशास्त्र, नीति शास्त्र और काम शास्त्र। अर्थशास्त्र राज्य कला और राजनीतिक सिद्धांत पर एक ग्रंथ है। नीति शास्त्र नीतियों पर सिद्धान्तों का संग्रह है।

अर्थशास्त्र चाणक्यनीति का सबसे प्रसिद्ध हिस्सा है। यह शासनकला और राजनीतिक सिद्धांत पर एक व्यापक ग्रंथ है जिसमें विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें सत्ता की प्रकृति, राज्य की भूमिका, सैन्य ताकत का महत्व और प्रभावी प्रशासन की आवश्यकता शामिल है। अर्थशास्त्र एक यथार्थवादी कार्य है जो राजनीति के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाता है। यह नैतिकता या नैतिकता से संबंधित नहीं है, बल्कि राजनीतिक सफलता प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है।

मुख्य शब्द

शास्त्र, राजनीतिक, नैतिकता, आदर्श, समाज

भूमिका

नीति शास्त्र नीतियों पर सिद्धान्तों का संग्रह है। अर्थशास्त्र की अपेक्षा नीति शास्त्र अधिक आदर्शवादी है। इसका संबंध आदर्श शासक और आदर्श समाज से है। नीति शास्त्र सिखाता है कि शासक को न्यायप्रिय और सदाचारी होना चाहिए, और यह कि समाज को धर्म, या धार्मिकता के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए।

काम शास्त्र कामुकता और संभोग पर एक ग्रंथ है। काम शास्त्र अर्थशास्त्र या नीति शास्त्र की तुलना में अधिक हल्का दिल वाला काम है। इसका संबंध संभोग की कला और आनंद की खोज से है। काम शास्त्र सिखाता है कि संभोग एक प्राकृतिक और आनंददायक गतिविधि है जिसका दोनों भागीदारों द्वारा आनंद लिया जाना चाहिए।

चाणक्यनीति भारतीय राजनीतिक चिंतन में अंतर्दृष्टि का एक मूल्यवान स्रोत है और सदियों से भारतीय राजनीतिक और सामाजिक विचारों को आकार देने में प्रभावशाली रही है। अर्थशास्त्र एक यथार्थवादी कार्य है जो राजनीति के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाता है। नीति शास्त्र अधिक आदर्शवादी है और शिक्षा देता है कि शासक को न्यायप्रिय और सदाचारी होना चाहिए। काम शास्त्र एक हल्का दिल वाला काम है जो प्यार करने की कला और आनंद की खोज से संबंधित है।

चाणक्य नीति एक संस्कृत पाठ है जिसे भारत में राजनीतिक दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक माना जाता है। यह एक ब्राह्मण विद्वान और राजनेता चाणक्य द्वारा लिखा गया था, जो ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में रहते थे। चाणक्य नीति सूक्तियों और सिद्धांतों का एक संग्रह है जो एक सफल और सदाचारी जीवन जीने की सलाह देता है।

पाठ को 13 अध्यायों में बांटा गया है, जिनमें से प्रत्येक जीवन के एक अलग पहलू से संबंधित है। शामिल विषयों में राजनीति, अर्थशास्त्र, युद्ध और व्यक्तिगत नैतिकता शामिल हैं। चाणक्य नीति एक अत्यधिक व्यावहारिक पाठ है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के तरीके के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

पाठ आज भी प्रासंगिक है, और इसकी अंतर्दृष्टि स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला पर लागू की जा सकती है। उदाहरण के लिए, मुश्किल लोगों से निपटने के तरीके पर सलाह कार्यस्थल पर लागू की जा सकती है, और पैसे का प्रबंधन कैसे करें व्यक्तिगत वित्त पर लागू किया जा सकता है।

चाणक्य नीति किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान संसाधन है जो एक सफल और पूर्ण जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन की तलाश में है। पाठ ज्ञान और व्यावहारिक सलाह से भरा है जिसे किसी भी स्थिति में लागू किया जा सकता है।

यहां चाणक्य नीति की कुछ प्रमुख जानकारियां दी गई हैं जो आज भी आधुनिक युग में प्रासंगिक हैं

• आत्म–ज्ञान का महत्व चाणक्य नीति सिखाती है कि सफलता का पहला कदम स्वयं को जानना है। इसका मतलब है अपनी ताकत और कमजोरियों, और अपने लक्ष्यों और आकांक्षाओं को समझना।

• योजना का महत्व चाणक्य नीति सिखाती है कि सावधानीपूर्वक योजना बनाने से ही सफलता मिलती है। इसका अर्थ है लक्ष्य निर्धारित करना, रणनीति विकसित करना और कार्रवाई करना।

• दृढ़ता का महत्व चाणक्य नीति सिखाती है कि सफलता के लिए दृढ़ता की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है कभी भी हार न मानना, विपत्ति के सामने भी।

• सत्यनिष्ठा का महत्व चाणक्य नीति सिखाती है कि सफलता सत्यनिष्ठा पर आधारित है। इसका मतलब ईमानदार, भरोसेमंद और नैतिक होना है।

• करुणा का महत्व चाणक्य नीति सिखाती है कि करुणा से सफलता बढ़ती है। इसका मतलब दयालु, देखभाल करने वाला और समझदार होना है।

चाणक्य नीति एक कालातीत पाठ है जो एक सफल और पूर्ण जीवन जीने के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। पाठ आज भी प्रासंगिक है, और इसके ज्ञान को कई तरह की स्थितियों में लागू किया जा सकता है।

चाणक्य नीति को आधुनिक युग में कैसे लागू किया जा सकता है, इसके कुछ विशिष्ट उदाहरण यहां दिए गए हैं

• कार्यस्थल में मुश्किल लोगों से निपटने के लिए चाणक्य नीति की सलाह को कार्यस्थल पर लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, पाठ सिखाता है कि कठिन लोगों के साथ व्यवहार करते समय शांत और एकत्रित रहना और उनके तर्कों में उलझने से बचना महत्वपूर्ण है।

• व्यक्तिगत वित्त में चाणक्य नीति की सलाह है कि धन का प्रबंधन कैसे किया जाए, इसे व्यक्तिगत वित्त पर लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, पाठ सिखाता है कि पैसा बचाना, बुद्धिमानी से निवेश करना और कर्ज से बचना महत्वपूर्ण है।

• रिश्तों में रिश्तों को मजबूत कैसे बनाया जाए, इस पर चाणक्य नीति की सलाह व्यक्तिगत संबंधों पर लागू की जा सकती है। उदाहरण के लिए, पाठ सिखाता है कि रिश्तों में ईमानदार, भरोसेमंद और सहायक होना महत्वपूर्ण है।

चाणक्य नीति किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान संसाधन है जो एक सफल और पूर्ण जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन की तलाश में है। पाठ ज्ञान और व्यावहारिक सलाह से भरा है जिसे किसी भी स्थिति में लागू किया जा सकता है।

आधुनिक युग में चाणक्य नीति का महत्व

चाणक्य की प्रतिबद्धता असीम है, और इस असाधारण विद्वान, तर्कशास्त्री, प्रशिक्षक, सलाहकार और रणनीतिकार को याद करने का सबसे आदर्श तरीका उनकी दृष्टि और पाठों को जीवित रखना होगा।

चाणक्य भारत के एक राजनेता और वित्तीय विशेषज्ञ थे। उन्होंने विभिन्न मौद्रिक मुद्दों पर अपने स्वयं के दृष्टिकोण स्थापित किए और ग्रामीण निर्माण को सुव्यवस्थित करने सहित कृषि के विभिन्न भागों की जांच करने का श्रेय दिया गया। उन्होंने प्रशासन और कब्जे जैसे विभिन्न वर्गों पर निर्भर कृषि भूमि का आदेश दिया। उन्होंने इसी तरह सामान्य परिस्थितियों में अनाज के वर्गीकरण को भूमि आय के रूप में सामने रखा।

उनकी दृष्टि, रणनीति और चतुराई ने मौर्य साम्राज्य को अपनी सीमाओं का विस्तार करने में मदद की। उन्होंने चंद्रगुप्त के पुत्र बिंदुसार की भी सेवा की। यह भी स्वीकार किया जाता है कि चाणक्य अखंड भारत की कामना करते थे। उन्होंने महसूस किया कि सभी प्रांतीय राजाओं के लिए शामिल होना महत्वपूर्ण था ताकि वे अपरिचित घुसपैठ से लड़ने के लिए सब कुछ समझ सकें। उन्होंने अपनी राजनीतिक चतुराई से विभिन्न राज्यों के शासकों के साथ संघों का निर्माण किया और इस तरह मौर्य साम्राज्य की अंतर्निहित नींव को मजबूत करने का विकल्प था।

अतीत में घटित होने वाली कुछ अविश्वसनीय घटनाओं का मुख्य रूप से उपयोग होता है यदि आने वाली चीजों की उन्नति के लिए इसे वर्तमान में लागू किया जाता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, प्राचीन भारत में दिए गए राजकीय शिल्प में सबसे प्रसिद्ध, एक ऐसी रचना है जो पूरी तरह से राजनीतिक, वित्तीय और नियामक विचारों का प्रबंधन करती है, जिस पर एक राजा अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर सकता है।

चाणक्य का पहला स्थायी मानक निश्चित रूप से वह है जो शासक को साम्राज्य के अंदर और बाहर की परिस्थितियों के बारे में सूचित करने के लिए कहता है। डेटा प्रवाह के लिए राज्य के पास अपने मानक होने चाहिए और संवेदनशील डेटा को बचाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, उसे समाप्त किया जाना चाहिए। राज्य के ज्ञान कार्यालयों का कार्य एक ऐसा चक्र है जिसका चाणक्य ने गहन निरीक्षण किया था।

यह कहा गया था कि विभाजकों के कान होते हैं और चाणक्य ने एक विशेष उपदेश दिया, इस प्रकार, प्रतिबंधित बुद्धि का पत्राचार वर्तमान फुटबॉल क्षेत्र के आकार के क्षेत्र के केंद्र बिंदु पर बेहतर किया जाएगा। यह कि एडिट इनोवेशन के माध्यम से आवाज की पहचान वर्तमान में दूर के क्षेत्रों से संभव होनी चाहिए, उस महत्व को कम नहीं करता है जो तब विरोधी द्वारा निजी पत्राचार के संभावित गुप्त हस्तक्षेप पर ध्यान दिया गया था।

चाणक्य ने निर्विवाद रूप से देखा जब उन्होंने प्रस्ताव दिया कि राज्य की ताकत अंततः अपनी सामरिक शक्ति से प्राप्त होती है, लेकिन एक चतुर सुझाव में कि राज्य की अर्थव्यवस्था के कारणों से जुड़ा हुआ है, उन्हें इस क्षमता को एक अत्यंत टिकाऊ टुकड़े का मिश्रण होना चाहिए था, या स्थायी सशस्त्र बल और लघु सूचना पर सक्रिय भाग। इसके लिए, वह बाद में प्रवेश के रूप में जाने जाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सभी किशोरों को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करने की संभावना की ओर झुक गया।

चाणक्य, अपनी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि में, सामान्य साथियों और संभावित भागीदारों के बीच एक योग्यता बनाते हैं और समग्र प्रभाव के विचार को स्पष्ट करते हैं। यह बाद में शीत संघर्ष की लंबी अवधि में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के केंद्रीय खिलाड़ी के रूप में उभरा और शीत–संघर्ष के बाद के समय में भी प्रासंगिक हो गया।

जैसा कि वर्तमान में संदर्भित है, चाणक्य को राज्य की शक्ति और राज्य पर शासन करने वाले राजनीतिक प्राधिकरण की अतुलनीयता में विश्वास था। साम्राज्य के अंदर नस्ल और स्थान की विषमता के बावजूद वह भरत में शामिल हो गया। राज्य की सुदृढ़ता और सुरक्षा उनका शानदार मिशन था। उनके पास राज्य को रैंक और वर्ग से ऊपर रखने का विकल्प था और सच कहा जाए तो धर्म के ऊपर किसी धार्मिक दर्शन आधारित पद्धति के बजाय धर्म की परिकल्पना को शासक के मूल मूल्य के रूप में प्रस्तावित किया। धर्म या सही नेतृत्व दायित्व, नागरिक अधिकार और दायित्व में शामिल हो गया।

चाणक्य के अनुसार जब भी शास्त्रों और धर्म के आधार पर निर्मित कानून के बीच विवाद होता है, तो रचित कानून जीत जाता है। अत्याधुनिक राज्य शासन की इस उचित प्रणाली की नकल करने के लिए अच्छा करेंगे। चाणक्य ने आंतरिक सद्भाव और सुरक्षा के महत्व का अनुमान लगाया, शासक के लिए एक उदारवादी दृष्टिकोण का सुझाव दिया, उस असंगत उपचार पर ध्यान आकर्षित किया और नफरत को शांत करने की क्षमता के विकल्प का अभ्यास करने से पहले विवादास्पद सभाओं को लाने के लिए शांति, रियायतों और लाभों की तकनीक का समर्थन किया।

हमारे अवसरों के दो अतिरिक्त युग परिवर्तन हैं जो दूर से चाणक्य के विचारों के साथ इंटरफेस करते हैं लेकिन राज्य के हितों की सेवा के लिए एक पूरी तरह से नई व्यवस्था और रचनात्मक अनुप्रयोग की आवश्यकता है। एक मध्यस्थ युद्धों की खासियत का आरोहण है, विशेष रूप से शीत–संघर्ष के बाद के समय में खुले सैन्य हमलों के विकल्प के रूप में। अवैध धमकी इस भयानक लड़ाई का नया मौजूदा हथियार है जो प्रतिकूलता और नियंत्रक के साथ प्रतिकूलता प्रदान करता है।

एक आदमी जिसे इतना समृद्ध माना जाता है कि उसने एक सड़क के बच्चे को भारत का शासक बना दिया। हो सकता है आज इसका महत्व कम हो गया हो, फिर भी उनके सबक वास्तव में एक महत्व रखते हैं और विशेष रूप से तब जब भारत लगातार राजनीतिक अशांति से बचा रहा है। यह अप्रत्याशित प्रतीत होता है कि जिस देश को सैकड़ों साल पहले बिना किसी गुणी व्यक्ति की सहायता के एक साथ लाया गया था, वह अंदर से विद्रोह का सामना कर रहा है।

यदि चाणक्य ने अपने अर्थशास्त्र के माध्यम से राजनीति और वित्तीय मामलों के सार को बदल दिया, तो उन्होंने इसी तरह चाणक्य नीति की अपनी व्यावहारिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से सामान्य निवासियों के जीवन को और विकसित करने के उपायों का वर्णन किया है। जैसा कि हमारे सामान्य जीवन में धर्म का विनाशकारी नियंत्रण बाबाओं द्वारा घोषित किया गया है, उनके शब्द ईश्वर प्रतीकों में अनुपस्थित हैं। आपकी भावनाएँ आपके ईश्वर हैं। आत्मा आपका अभयारण्य है एक निर्देशक शक्ति प्रतीत होती है।

जैसा कि हमारी आम जनता को बिगड़ते संबंधों के सामान्य संकट का सामना करना पड़ता है, उनके ये शब्द विवेकपूर्ण सलाह के रूप में आते हैं कभी भी ऐसे व्यक्तियों से दोस्ती न करें जो आपसे ऊपर या नीचे हैं। ऐसी दोस्ती आपको कभी भी संतुष्टि नहीं देगी जैसा कि किसी को पता होना चाहिए कुछ है प्रत्येक रिश्तेदारी के पीछे व्यक्तिगत जिम्मेदारी। व्यक्तिगत परिस्थितियों के बिना कोई संगति नहीं है। यह एक कठोर सच्चाई है।

विचार विमर्श

चाणक्य का दृढ़ मत था कि अर्थशास्त्र का अंतिम उद्देश्य राजा के विषयों के कल्याण को बढ़ाना है और कहते हैं, राजा, मंत्री, देश, गढ़वाले शहर, खजाना, सेना और सहयोगी राज्य के घटक तत्व हैं। राज्य। उन्होंने राजकोष और कराधान की जांच करने से पहले राजा की अर्थव्यवस्था और कार्यों के उद्देश्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

कौटिल्य एक आदर्श ग्रामीण को परिभाषित करते हैं, वह जो लोगों की समृद्धि और कल्याण में हमेशा सक्रिय रहता है और जो लोगों को समृद्ध करके और उनका भला करके खुद को प्यार करता है। एक तरह से उन्होंने कल्याणकारी राज्य और अधिकतम उपयोगिता की संकल्पना की। उन्होंने सुशासन पर जोर दिया जिसमें अर्थशास्त्र, नियामक ढांचा, कर, कूटनीति, प्रशासन और व्यापार शामिल हैं।

उनका दृष्टिकोण समग्र था क्योंकि उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा, पड़ोसी राज्यों के साथ संबंध, युद्ध की कला, जासूसों के नेटवर्क, मंत्रियों के चयन, अर्थव्यवस्था को व्यवस्थित करने और राज्य के राजस्व को इकट्ठा करने और वितरित करने जैसे राज्य के कामकाज के बारे में कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों की व्याख्या की।

कई मायनों में कौटिल्य के विचार पहले के पश्चिमी अर्थशास्त्रियों की तुलना में आर्थिक मार्गों से देश की सुरक्षा और प्रभुत्व लाने के मामले में व्यापक थे। भ्रष्टाचार पर उनका दृष्टिकोण बहुत अधिक व्यावहारिक है। वह उद्धृत करते हैं, जिस प्रकार जीभ की नोक पर पाए जाने वाले शहद का स्वाद न लेना असंभव है, उसी प्रकार एक सरकारी कर्मचारी के लिए यह असंभव है कि वह न खाए। वह यह भी कहते हैं, जिस प्रकार पानी के नीचे चलने वाली मछलियों को पीने या पीने के पानी के रूप में नहीं पाया जा सकता है, उसी तरह सरकारी काम में लगे सरकारी कर्मचारियों को पैसे लेते हुए नहीं पकड़ा जा सकता है। इसलिए वह एक मजबूत लेखा परीक्षा प्रणाली और कुशल और ईमानदार प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए तर्क देते हैं।

मुख्यधारा के अर्थशास्त्री सामाजिक कल्याण को अधिकतम करने के लिए उदार बाजार प्रणाली का पक्ष लेते हैं और हालांकि इस पर चाणक्य विपरीत खड़े हैं, क्योंकि वे एक मजबूत निरंकुश राजतंत्र का समर्थन करते हैं लेकिन अंतिम उद्देश्य देश और नागरिकों की रक्षा करना था। वह राजा और नागरिकों के बीच एक निहित सामाजिक अनुबंध का उल्लेख करता है और उसके अनुसार कराधान का आधार है। वह अपने दृष्टिकोण में कट्टरपंथी था जब वह कहता है कि यदि राजा अपने नागरिकों की रक्षा करने में

विफल रहता है, तो लोग विद्रोह कर सकते हैं, राजा का सिर काट सकते हैं या कर का भुगतान नहीं कर सकते हैं और यहां तक कि भुगतान की गई कर राशि की माफी भी मांग सकते हैं।

निष्कर्ष

कौटिल्य का अर्थशास्त्र पैगम्बरी धर्मों के दृष्टिकोण से पहले की अवधि में बनाया गया था – विशेष रूप से इस्लाम एक और मुख्य ईश्वर पर अपने प्रतिबंधात्मक मामले के साथ – और यह एक बहस का विषय है कि कैसे राजनीतिक विद्वान एक ऐसी परिस्थिति का प्रबंधन करते जहां साम्राज्य में धर्म चल रहे थे एक दूसरे के खिलाफ और विश्वास के आधार पर व्यक्तियों को अलग करना। उन्होंने राज्य को धर्म, नस्ल और प्रांतीय वफादारी से ऊपर रखा – एक विरासत वोट आधारित भारत ने आज तक सुरक्षित रखा है।

इस वास्तविकता का कोई खंडन नहीं है, इसके बावजूद, कि भारत की ईमानदारी और सुरक्षा की रक्षा करने की वर्तमान परीक्षा नई पेचीदगियों से टकराई हुई है और राज्य के लिए पत्थरबाजी की सबसे अधिक आवश्यकता नहीं है, जो उन शक्तियों को कम करने के लिए सबसे अधिक आवश्यक है, जो आतंक फैलाने वाली क्रूरता का आनंद लेती हैं। विश्वास की खातिर और अल्पसंख्यक राजनीति चलाकर देश की एकता को कमजोर किया।

संदर्भ

- झा, एल.के. और के.एन. झा (2018) कौटिल्य द पायनियर इकोनॉमिस्ट ऑफ द वर्ल्ड, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम 25 संख्या 2–4, पीपी 267–282
- कामथ, एम.वी. (2018) 21वीं सदी के लिए कौटिल्य, पुस्तक समीक्षा डॉ. नारायणाचार्य के.एस. और आज के लिए कौटिल्य की प्रासंगिकता
- कांगले, आर.पी. (2012) कौटिल्य अर्थशास्त्र भाग एच–एक अंग्रेजी अनुवाद आलोचनात्मक और व्याख्यात्मक नोट्स के साथ, दूसरा संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा लिमिटेड, दिल्ली।
- कांगले, आर.पी. (2016) कौटिल्य अर्थशास्त्र भाग 1– एक अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली
- एल.एन. रंगराजन, कौटिल्य द्वारा अर्थशास्त्र अनुवादित, पेंगुइन द्वारा प्रकाशित, 2017
- बी के चतुर्वेदी, चाणक्य नीति, डायमंड बुक्स, 2011
- आर. शमाशास्त्री (अनुवादक), 2017, कौटिल्य और अर्थशास्त्र, मैसूर प्रिंटिंग एंड पब्लिशिंग हाउस, मैसूर